इकाई 7 कन्फ़्यूशसवादी परम्परा

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य
7.1 प्रस्तावना
7.2 राजपद (Emperorship)
7.3 विद्वान्-पदाधिकारी
7.3.1 परिक्षाएँ तथा नौकरशाही का प्राधार
7.3.2 विभाजित निष्ठाएँ : परिवार बनाम सम्राट
7.4 राजवंशीय चक्र
7.5 कन्फ़्यूशसवादी साम्राज्यीय विचारधारा का अंत
7.6 सारांश
7.7 शब्दावली
7.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें
7.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.0 उद्देश्य

कहा जाता है कि चीनी साम्राज्य तीन टाँगों पर खड़ा हुआ करता था :

- राजतंत्र;
- विद्वालन्-पदाधिकारीगण; और
- पदाधिकारियों की कन्फ़्यूशसवादी विचारधारा।

इन तीनों सत्ताओं पर अलग-अलग, और उत्तरी घास के मैदानों (Steppe) में चीन के घुड़सवार, खानाबदोश पड़ोसियों के संबंध में विचार करना पड़ता है। यह हमें चीन के अनेक राजवंशों के बनने और बिगड़ने के बारे में समझने में मदद करेगा। अपने चरमोत्कर्ष पर अनेक चीनी साम्राज्यों का राज्य क्षेत्र इतना विशाल था जितना कि इतिहास में और कहीं नहीं था; और जब वे विखण्डित होते तो वहाँ व्यापक अव्यवस्था होती थी। उत्थान और पतन का यह चक्र इस महान् सभ्यता के इतिहास में दो हज़ार वर्षों में से भी अधिक तक बारम्बार देखा जा सकता है। प्रस्तुत इकाई इन प्रश्नों से संबंधित है :

- कन्फ़्यूशसवादी परम्परा में मुख्य धारणाएँ क्या थीं, और चीनी साम्राज्यीय शासन में उनकी क्या भूमिका थी?
- चीनियों और उत्तरी घास के मैदानों के घुड़सवार खानाबदोशों के बीच क्या संबंध था?
- चीनी राज्य-व्यवस्था संस्थाओं व विचारधारा की एक विषेश शृंखला की ओर बार-बार कैसे लौट सकी?
- जटिल, शानदार रूप से सफल साम्राज्य बारम्बार विखंडित क्यों हुए?

7.1 प्रस्तावना

ऐतिहासिक जानकारी....., सर्वदा प्रक्रियाओं की जानकारी है, घटनाक्रम के विषय में जानना नहीं, (मुदीप्ता कविराज) बल्कि तानेबानों की तर्कयंगति (logic) का पता लगाना है।

कन्फ़्यूशसवाद चीनी इतिहास का हिस्सा है; और जटिल अतीत को समझने का प्रयास करते हुए हम भौगोलिक तथ्यों से शुरू करते हैं। सुविस्तृत हिमालय और उससे जुड़ी पर्वतमाला चीन को पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम स्थित भारतीय उपमहाद्वीप से अलग करती है; वृहद मध्य एशियाई घास के मैदान उत्तर में फैले हैं; प्रशान्त महासागर पूर्व में लहराता है; और भारत-चीनी प्रायद्वीप दक्षिण में स्थित है। इस पार्थक्य के बावजूद चीन की अत्यधिक समृद्धि ने हज़ारों सालों तक उत्तर से घड़सवार विजेताओं और दूर-दूर जल-थल से व्यापारियों को आकर्षित किया।

बर्फ से ढके विशालकाय पहाड़ उन महानदियों की आपूर्ति करते हैं जो देश के मानचित्र पर सर्पाकार आकृति में नज़र आती हैं, धरती पर बाढ़ लातीं है, खासकर अपने डेल्टा क्षेत्रों में। ह्वांगहो, या पीली नदी, और यांग्त्ज़े सबसे बड़ीं हैं और सर्वाधिक प्रसिद्ध भी। ह्वांगहो अपने साथ ढेरों मिट्टी/बालू आदि लाता है। जो उनके उतार पर वहीं जम जाती हैं, और इस कारण यांग्त्ज़े की भाँति वहाँ खेने की उपयुक्त ज़मीन नहीं रहती; परन्तु इन नदियों को नहरों का जाल बिछाकर बढ़ा दिया गया, जो कि तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व पश्चात् तीव्र प्रेरित सम्राटों की झोंक में आकर बनती रहीं। 20वीं शताब्दी तक जलमार्गों की बगल में यातायात किफ़ायती था और सड़कों पर कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण।

अपने गर्म दक्षिण और ठंण्डे उत्तर व पश्चिम के बीच चीन परिस्थितिकियों की एक विस्तृत व्यूह रचना प्रस्तूत करता है। यांग्त्ज़े के यिंचित मैदान चावल उत्पादन के लिए विश्व के मुख्य भूभाग रहे हैं ; चीन की और एकतिहासिक रूप से महत्त्वपूर्ण पैदावार में शामिल हैं– गेहूं, चाय, रेशम, नमक। खनिजों की भी एक शृंखला लम्बे समय से कोयला, लोहा, ताँबा, टिन, चाँदी, जेड़ व खनिज तेल के उत्पादन हेतु दोहित की जातीं रहीं हैं। प्रौद्योगिकी के लिहाज से चीन 14वीं शताब्दी तक विश्व में अग्रणी रहा।

दो हज़ार से भी अधिक सालों तक चीनवासी साम्राज्यीय राज्यों के तहत रहे, तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर बीसवीं शताब्दी तक क्षेत्रीय शक्तियों ने स्वायत्तता एवं स्वाधीनता के विभिन्न मानदण्डों का दावा किया। चीनी इतिहासकार इन कालावधियों को राजतंत्रीय अक्षमता से पैदा हुई अव्यवस्था के क्षणों के रूप लिया करते थे। ऐसे काल सिर्फ़ किसी ऐसे नए राजवंश के उदय के साथ ही समाप्त हो सकते थे, जो शासन हेतु ''स्वर्ग की आज्ञा'' से सम्पन्न हो।

अनेक बार पुरोदित (re-emerged) साम्राज्यीय राज्यों ने, चीन और उससे लगे मध्य एशियाई घास के मैदानों के लिए, उनके बीच विचारधाराओं, स्रोतों, प्रथाओं व प्रेरणाओं के कुछ चिरस्थायी रूप समाविष्ट किए हैं। एक नए राजवंश की स्थापना के लिए चीन के भीतर से ही महत्त्वकांक्षी लोग सामने आ सकते थे, परन्तु अक्सर वे उत्तर से भी आये। पुनः चीन में भारत की भाँति नए राजवंशों की स्थापना उत्तर के घुड़सवार यायावर विजेताओं, अथवा चीन में उनके साम्राज्य (1276-1367) द्वारा भी की गयी। तथापि, चीन पर शासन करना उसके जटिल समाज, अर्थव्यवस्था, राज्य-व्यवस्था, पारिस्थितिकी, व प्रौद्योगिकी के साथ-घुड़सवार विजेताओं का काम नहीं था। उसे कुछ ख़ास की दरकार थी ; और वो विद्वानों के एक ऐसे वर्ग द्वारा प्रदान किया गया जो कन्फ़्यूशस व अन्य प्राचीन गुरुओं से शिक्षा प्राप्त थे, और जिन्होंने एक सम्राट के अधीन शासन करने की परम्परा को जन्म दिया।

बॉक्स 1

राजवंशी लेखाचित्र

नोटः चीनी भाषा के शब्द लिखने में नामों समेत, यह इकाई बेड-जाइल्स व्यवस्था का पालन करती है पर डायक्रिटिकल चिन्हों को छोड़ देती है।

काल	**राजवंश**	**इस इकाई में उल्लेखित विभूतियाँ**
11वीं से 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व	चू	राजा ईश्वर का पुत्र है उसे स्वर्ग से शासन का आदेश प्राप्त है। इसके बाद के चरण में अनेक कमोवेश स्वतंत्र राज्य।
403-221 शताब्दी ईसा पूर्व	संघर्षरत राज्य	
221-207 शताब्दी ईसा पूर्व	चिन	शिनझु आडति, चीन का प्रथम सम्राट 1 विधिज्ञ राज्य व्यवस्था
206 शताब्दी ईसा पूर्व से 8 ईस्वी	पूर्ववर्ती हैन	तुड.चुड.-शू, 179-104 शताब्दी ईसा पूर्व, साम्राज्यीय कन्फ्यूशसवाद प्रतिवाहित किया।
25-220 ईस्वी	परवर्ती हैन	
221-580 ईस्वी	विभिन्न राजवंश	
589-617 ईस्वी	सुई	विद्वान पदाधिकारियों के चयन हेतु परीक्षाएं आरंभ की गयी
618-906 ईस्वी	ताड.	
907-959 ईस्वी	पांच राजवंश और दस राज्य	
960-1126 ईस्वी	उत्तरी सड.	एक सशक्त नौकरशाही अपने पहलों के मुकाबले सम्राट पर अधिक निर्भर। 1126 में उत्तरी राजधानी छोड़ने के लिए बाध्य, याड.त्ज़े के तट पर हाड.शो में साम्राज्यीय राजधानी पुनर्स्थापित की।
1127-1275 ईस्वी	दक्षिणी सड. (तथा उत्तर में चिन)	
1276-1367 ईस्वी	मंगोल/युआन	
1368-1644 ईस्वी	मिड.	16वीं शताब्दीः यूरोप वासी आने लगे
1945-1911 ईस्वी	मांशू चिडे	19वीं शताब्दीःयूरोपीय दबाव के सामने चीन की कमजोरियां ज़ाहिर हो गयीं।

विचारों का यह निकाय जिसे कन्फ़्यूशसवादी विचारधारा (बॉक्स-1) के नाम से जाना जाने लगा, शताब्दियों तक विकाय (evolve) प्राप्त करता रहा क्योंकि इसके वाहक, विद्वान पदाधिकारीगण, अपनी परिस्थितियों को सफलतापूर्वक संभालते रहे : (1) राज्य चलाने में, और (2) राज्य द्वारा नियोजित न किए जाने के समय भी अपने जीवन प्रबंधन में। इस सब को ''कन्फ़्यूशसवादी'' के रूप में देखा गया– यह सिद्धांत कि कन्फ़्यूशसवाद वो है, जो कुछ भी कन्फ़्यूशस के अनुयायी सोचते और करते थे। इसमें बहुत कुछ, बल्कि विचारों का एक सार भाग निकाय आता था, जो कन्फ़्यूशसवाद (Confucianism) को परिभाषित किया किरता था। इनमें शामिल थे :

क) राजा की सत्ता का समर्थन करते विचार– यह उन्हें राजा के प्रति आज्ञापरायण सेवा करने को वचनबद्ध करते थे और, इस प्रकार की सेवा के माध्यम से समाज में कन्फ़्यूशसवादी मानदंण्डों के प्रचार का प्रयास (देखें बॉक्स-1 और नीचे 'ग');

ख) कार्यतः अपरिमित अनन्त विस्तार को सत्य मानते हुए जटिल कार्मकाण्ड;

ग) विद्वजनों के विषय में विचारों व आदर्शों की एक प्रभावशक्ति। उक्त विचारधारा ने पदानुक्रम के मत पर, माता-पिता के प्रति भक्ति पर, और नैतिक सद्गुणों पर अधिक बल दिया। ये आम मानदण्ड थे, जो राज्य व परिवार दोनों के प्रति व्यवहार्य थे। सद्गुण पर बल इस विचार में प्रकट हुए कि एक अनुकरणीय शासक बल प्रयोग व हिंसा का सहारा लिए जाने की आवश्यकता के बग़ैर, स्वयं द्वारा प्रस्तुत उदाहरण की शक्ति से शासन करने में सक्षम होना चाहिए। व्यवहारतः इस प्रकार के उदाहरणात्मक शासक जिनकी साधुता संर्पूण व्यवस्थित व्यवहार सुनिश्चित करती, को पाना मुश्किल काम था, और विभिन्न परिदृश्यों में बल प्रयोग व हिंसा का इस्तेमाल काफ़ी आम था।

बॉक्स 2

कन्फ़्यूशसवादी विचारधारा का उदय

कन्फ़्यूशस छठी और पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में एक चीनी विचारक और विद्वान हुए हैं। उनकी व अन्य प्राचीन की शिक्षाओं (मैंसियस, 372–289 ईसा पूर्व समेत) ने शासन की चीनी परम्परा को एक सांचे में ढ़ाला हैः सामाजिक एवं राजनैतिक व्यवहार के लिए और साम्राज्य की जटिल, प्रभावशाली कर्मकाण्डों की रचना करने के लिए सम्मानित मार्गदर्शकों के रूप में 1 कन्फ़्यूशसवाद ने राज्य के कार्यकलापों में नैतिकता के महत्व का प्रतिपादन किया, और शांति, मानवता और लगन जैसे मूल्यों का एक साम्राज्य पर शासन करने की विचारधारा के रूप में, यद्यपि चीनियों ने वैधिकवाद (Legalism) को पहले अपनाया।

शिह ह्नयुआंग–ति, प्रथम चीनी साम्राज्य चिन के संस्थापक ने 221 ईसा पूर्व में कन्फ्यूशसवादी परम्परा को उसके नीतिवाद समेत रद्द कर दिया। यहां तक उन्होंने इसकी पुस्तकों को जला डालने का आदेश दिया। इसकी बजाय उन्होंने वैधिक चिंतन में विश्वास दिखाया जोकि सख्त कानूनों, सम्राट की इच्छापूर्ति और किसी भी विरोध को बर्दाश्त न करने के साथ एक कठोर एवं प्रभावशाली राज्य की धारणा का समर्थन करता था। इसकी परिणति चौदह वर्ष बाद विद्रोह में हुई, नसीहतों का एक स्रोत इस विषय पर कि किसी राजवंश को असफलता से बचने के लिए एक राजवंश को किन बातों से बचना चाहिए। इसको कन्फ्यूशसवादियों के मध्य फिर हमेशा एक बुरे उदाहरण के रूप में याद रखा गया, यद्यपि जटिल और प्रायः परभक्षी पड़ौसियों से घिरे एक विशाल साम्राज्य के कार्यकलाप, वास्तव में अकेले कन्फ्यूशसवादी नैतिकता पर टिके नहीं रह सकते थे। साम्राज्य चलाने में कानूनी प्रवृत्तियां आम नहीं थीं, हालांकि कोई भी स्वंय को कानून वाला (Legalist) नहीं कहता था। चीन वासियों के पास एक विशाल सेना थी, और उक्त साम्राज्यीय राज्य बल प्रयोग से कभी पीछे नहीं हटा– आंतरिक अथवा बाह्य रूप से।

कन्फ्यूशसवादी परम्परा किसी भी तरह निष्क्रिय विचारों की कोई अपरिवर्तनशील संस्था नहीं रही। बिलकुल इसके विपरीत था। कन्फ्यूशस के लगभग चार शताब्दियों पश्चात् उससे जुड़े विचार धीरे-धीरे साम्राज्य वैधता-सिद्धांत में समाविष्ट किए जाने लगे। एक पूर्व कालीन राजपद, चू (11वीं से 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व) के बारे में यह प्रचार किया गया कि राजा 'ईश्वर के पुत्र' होते हैं, जिनके पास शासन करनेदका स्वर्ग से मिला आदेश होता है। चू के विघटन के बाद, आने वाली शताब्दियों (चौथी व तीसरी, ईसा पूर्व) जिन्हें

'संघर्षरत राज्य' काल के नाम से जाना जाता है, में अनेक छोटे राज्यों और उनके बीच काफी संघर्ष देखने को मिला। इनमें से कोई भी अन्नय रूप से स्वर्ग का कृपा पात्र होने संबंधी चू जैसा दावा कायम नहीं कर सका– और उक्त धारणा धीरे-धीरे समाप्त हो गयी। कन्फ्यूशस एक केन्द्रीय सत्ता के अभाव वाले इस विग्रह काल में काम करते और पढ़ाते थे। इस प्रकार की सत्ता अल्पकालीन चिन साम्राज्य (221–207 ईसा पूर्व) के साथ ही स्थापित हो पायी।

चू, संघर्षरत राज्य, चिन वंशः यह हैन वंश की पृष्ठ भूमि थी इसके राजनैतिक प्रबंध चिन की व्यवस्थाओं जैसे ही थे। चिन और हैन दोनो ही सफलतापूर्वक बल प्रयोग कर सत्ता में आये फिर भी हैन सम्राट चिंतित थेः चिन वंश जैसा अंत टालने के लिए क्या करें? उनकी मुख्य समस्या थीः उन्हें यह तथ्य सही ठहराना था कि अपने पूर्वजों को हटाने में उन्होंने बल प्रयोग किया था और साथ ही यह दर्शाना था कि उनके प्रतिद्वंदियों के लिए उन्हें हैन को, हटाने के लिए बल प्रयोग अनुचित होगा। उनके विद्वान सलाहकार तिस पर उस प्रकार के स्वर्गीय आदेश को लेकर चलते रहे जिस पर कि पहले चू राजाओं ने स्वंय दावा किया था। तुड.चुड.न्शू (179–104 ईसा पूर्व) नामक एक विद्वान ने राजवंशीय स्थायित्व सुनिश्चित करने के लिए विचारों का महत्वपूर्ण संयोजन प्रस्तुत किया; परंतु यह दो या तीन शताब्दियों में विचारों एवं व्यवहारों के क्रम विकास में बस एक ही कदम था– जिसमें उन विभिन्न विद्वानों व पदाधिकारियों का योगदान था जो अनेक प्रकार के तत्वों पर ज़ोर देते थे।

सरल रूप से, इसके फ्रेमवर्क में रखे गये कुछ विचार निम्न थेः

- एक ब्रह्माण्डीय दृष्टिकोण, जिसमें समग्र ब्रह्माण्ड–स्वर्ग, पृथ्वी और मनुष्यों के कार्यकलाप, सभी को एक ही व्यवस्था का हिस्सा समझा जाता था। राजा की ब्रह्माण्डीय व्यवस्था के सामंजस्य को बनाये रखने में निर्णयकारी समझा जाता था– उसके अपने चरित्रवान, अनुकरणीय आचार-व्यवहार के माध्यम से।
- स्वर्ग/ईश्वर सब कुछ रचता है, और मानवीय क्रियाकलापों में एक सक्रीय दिलचस्पी बनाये रखता है। जब असामान्य घटनाएं दिखायी पड़ती हैं (आकाश में कोई अपरिचित वस्तु, बाढ़ अथवा अज्ञात प्रकार का पौधा या प्राणी), ये ईश्वर द्वारा भेजे गए संकेत (omens) होते हैं। ये संकेत, जैसे की बाढ़ और सूखा, आकाश में असामान्य दृश्य–संचालन की अस्वीकृति का संकेत किए जाने के रूप में देखे जा सकते हैं, या फिर असाधारण जैविक रूपों से संबंधित खबरों की व्याख्या शासन धारी राजवंश पर ईश्वर के आशीर्वाद चिन्हों के रूप में की जा सकती है, अथवा शासन करने संबंधी नए ईश्वरीय आदेश के साथ एक नए राजवंश के सन्निकट उदय के रूप में। यदि इस प्रकार के सगुनों को विद्वानों द्वारा पहचान लिया जाए और समझ लिया जाए, तो उचित प्रत्युत्तर तैयार किए जा सकते हैं।
- स्वर्ग ताओ (Tao) की रचना करता है, यथा मानवीय क्रियाकलाप के लिए अपरिवर्तनशील मूल सिद्धांत; परंतु लोगों को अपनी विभिन्न एवं परिवर्तनशील परिस्थितियों हेतु उचित तरीकों से ताओं प्रयोग करने होते हैं।

आने वाली शताब्दियों में कन्फ्यूशसवाद नामक पैकेज विकसति होता रहा। इसमें एक जटिल विचार-समूह समाहित किया गया, क्योंकि इसके अनुयायी अपनी बदलती परिस्थितियों के प्रति अपनी परम्परा में उपलब्ध विचारों को लागू करने का प्रयास करते थे।

यह कन्फ्यूशसवादी परम्परा ही थी जिसने आने वाले समय में पदाधिकारियों की राजशक्ति पर अधिकार रखा। तुड. ने एक साम्राज्य चलाने में कन्फ्यूशसवादी की शिक्षाओं के महत्व पर बल दिया, और सुझाया कि इन शिक्षाओं में पारंगत विद्वान

सरकार में नियुक्त किए जाएं। सातवीं शताब्दी ईस्वी में एक कन्फ्यूशसवादी पाठ्यक्रम में परीक्षाएं पास करना प्रतिष्ठापूर्ण साम्राज्यीय नौकरशाही में प्रवेश करने के लिए और आगे बढ़ने में एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गया। सर्वाधिक महत्व, इसी कारण इन व इन से संबंधित पाठ्यक्रमों को जारी रखने, सीखने व आगे बढ़ाने को दिया गया; और इन परीक्षाओं के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम कन्फ्यूशसवादी सिद्धांत के लिए भी एक सशक्त माध्यम हो गया। चीन में विद्वानों को प्राप्त ऊँची प्रतिष्ठा में यह शिक्षा एक महत्वपूर्ण अवयव था, जो उस सत्ता समृद्धि से नितांत परे थी जो पद पर रहते हुए सफलता के साथ आती थी।

सुनिश्चित व्यक्ति का सम्मान शारीरिक श्रम करने वालों एवं मानसिक श्रम करने वालों के बीच भेद किए जाने का मामला था; सभी शिक्षाप्राप्त, और खासकर उनमें पदाधिकारियों को 'शासकों' के रूप में देखा जाता था, जबकि दूसरी ओर शारीरिक श्रम करने वालों को 'शासितों' के रूप में; परन्तु कारगर पदानुक्रम उससे कहीं अधिक जटिल था, जितना कि यह सरल भेदभाव बतलाता है।

चीनवासियों, और खासकर उनका सुशिक्षित वर्ग जिसमें पदाधिकारीगण आते थे, की तुलना में उत्तरी घुड़सवारों ने उनकी राजनीतिक परम्पराओं ने जनजातीय संगठन और, उससे भी बढ़कर, जनजातीय गठबंधनों हेतु व्यवस्था जुटा दी। इन स्वयं इच्छुक योद्धा घुड़सवारों के बीच गठबंधन का रास्ता निकालना आसान नहीं था; इसके लिए अनुप्राणित नेतृत्व की आवश्यकता थी। मूर्त रूप धारण करने पर ये घुड़सवार मंथर गति से चलते चीन वासियों को रौंद डाल सकते थे, कम से कम उत्तर में, ह्वांगहो के आसपास के क्षेत्र में।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों की जाँच इकाई के अन्त में दिए गए आदर्श उत्तरों से करें।

1) पाँच ऐसे प्रमुख पारिस्थितिक तत्त्वों की सूची बनाएँ जिन्होंनें चीनी इतिहास के घटनाक्रम को प्रभावित किया है।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) कन्फ़्यूशसवादी विचारधारा कैसे उभरी?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) कन्फ़्यूशसवादी साम्राज्यीय विचारधारा में मुख्य धारणाएँ क्या थीं?

.....

.....

.....

.....

.....

4) चीनी इतिहास में साम्राज्यीय परिक्षाओं का क्या महत्त्व था?

.....

.....

.....

.....

.....

7.2 राजपद

भारत में मुगल साम्राज्य के लिए कहा गया है कि सम्राट ही उसका ''मुख्य प्रेरणास्रोत'' होता था; साम्राज्यीय शासन कितनी अच्छी तरह काम करेगा उसकी प्रभावकारिता पर निर्भरता था। चीन में भी सम्राट एक मुख्य स्रोत की तरह ही था। चीन में विद्वान-पदाधिकारियों की कोई परम्परा नहीं थी, और 7वीं शताब्दी तक उन्हें एक व्यापक परीक्षा पद्धति के माध्यम से चूने जाने की शुरुआत हो रही थी। धन्य है उनका साझा ज्ञान, कुशलताएँ, प्रेरणाएँ व परंपराएँ जो कि वे विशालकाय साम्राज्यों (तांग, मिंग, चिंग) को चलाने हेतु अधिकारी वर्ग के विशाल तानेबानों को बनाने में सक्षम थे। उनका वेतनमान पूर्व-औपनिवेशिक भारत में रहे किसी भी वेतन मान से हर तरह से ऊँचा ही था। इस नौकरशाही के पास एक साझा विचारधारा व परपम्रा, और राजवंश के प्रति निष्ठा पर्याप्त रूप से इतनी थी कि यह अक्षम साम्राटों के रहते हुए भी काम कर सके। 12वीं शताब्दी में यह तंत्र, उत्तरी आक्रमणकारियों के दबाव के तहत उत्तरी राजधानी के हाथ से निकल जाने और नए सिरे से यांग्त्ज़े के दक्षिण को राजधानी बनाने के बावजूद जुड़ा रहा। कारणों के लिए हम आगे पढ़ेंगे, बहरहाल, जब सम्राट असफल हो गए तो साम्राज्य पर गंभीर खतरा मँडराने लगा।

फिर भी सम्राट चूँकि ''स्वर्ग का पुत्र'' था, वह तमाम वैधता का स्रोत था। एक सम्राट जिसे अपने आप पर भरोसा होता तो वह अपने हित, अथवा नज़रिये पर खतरे को भाँप कर अधिकारी-तंत्र को एक तरफ कर अपना रास्ता निकाल लेता था। शुरुआती शताब्दियों में सम्राट को बहुत हद तक वंशानुक्रमिक अभिजात्य तंत्र (Aristocracy) की सत्ता को मान्यता दे देनी पड़ती थी, जिसके भी सदस्य अग्रणी पदाधिकारीगण होते थे। सुंग (960-1275) तक आते-आते अभिजाततंत्र ऐसे शासक वर्ग को रास्ता दे चुका था जो सम्राट की चापलूसी अभिजात्यतंत्र से कहीं अधिक करता था। इसके बाद सम्राट के हाथों में और अधिक सत्ता संकेन्द्रण तथा उसका विरोध करने पर और कड़े दण्ड का प्रावधान हो गया। 15वीं शताब्दी तक सैन्सोरेट वस्तुतः ''विरोध प्रदर्शन'' संबंधी अपना पहले का काम छोड़ चुका था। वह सिर्फ़ एक निगरानी एजेन्सी बना रहा, जिससे सैन्सोरेट एक ऐसा साधन बन गया जिसे सम्राट व उसके अभिकर्त्ता नौकरशाही और व्यापक रूप से समाज पर नियंत्रण करने में प्रयोग कर सकते थे।

अपने अधिकारी वर्ग के संबंध में सम्राट कितना शक्तिशाली था इस बात में प्रकट होता था कि उसकी उपस्थिति में किस प्रकार व्यवहार करना है। राजवंशों के पास से गुज़रने पर उनसे जिस व्यवहार की अपेक्षा की जाती थी, वह उत्तरोत्तर और दासोचित होता गया। तांग (618-906 ईस्वी) के काल में पदाधिकारीगण सम्राट के साथ बैठ सकते थे; सुंग (960-1275 ईस्वी) के काल में उन्हें बैठे हुए सम्राट के समक्ष खड़ा होना पड़ता था; और मिंग (1368-1644 ईस्वी) व चिंग (1645-1911 ईस्वी) के काल में उनसे अपेक्षा की जाती थी कि साष्टांग दण्डवत करें और सम्राट के सामने घुटने टेकें।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों की जाँच इकाई के अन्त में दिए गए आदर्श उत्तरों से करें।

1) चीन में सम्राट व उसके पदाधिकारियों के बीच क्या संबंध था?

.....

.....

.....

.....

.....

7.3 विद्वान्-पदाधिकारी

7.3.1 परिक्षाएँ तथा नौकरशाही का प्राधार

शासन करने के ''स्वर्ग के आदेश'' के बावजूद चीनी सम्राट साम्राज्य पर शासन करने के लिए अपने कन्फ़्यूशसवादी विद्वान-पदाधिकारियों पर निर्भर रहता था। अधिकारी-वर्ग सम्राट से अपने सद्गुण का उदाहरण रख शासन करने और साम्राज्य चलाने का काम उन पर छोड़ देने का आग्रह करता था। इस काम में कठोर कर्मकाण्ड इस प्रकार निर्दिष्ट किए गए थे कि वे समष्टि रूप में समाज के लिए सद्भावपूर्ण व्यवस्था और पदानुक्रम का भाव उत्पन्न करें। विद्वान-पदाधिकारीगण इस कर्मकाण्ड में भी निपुण होते थे।

सम्राट और पदाधिकारियों के बीच संबंध चीनी साम्राज्यीय नौकरशाही के क्रम विकास में निर्णायक भूमिका निभाता था। यह एक धीमी प्रक्रिया थी। प्रथम सहस्राब्दि-मध्य ईस्वी तक, प्रथम सम्राट के समक्ष, चीन में शासकगण पहले से ही विद्वानों को नियुक्त करते रहे थे और उनकी मंत्रणा प्राप्त करते रहे थे, परन्तु यह संबंध विशिष्ट विद्वानों के बीच होता था।

हैन साम्राज्य (206 ईसापूर्व-220 ईस्वी) ने विद्वानों को एक पदानुक्रम में सुव्यवस्थित रूप दे दिया। तथापि उसके बाद, छठी शताब्दी के अंतिम वर्षों में सुई से शुरू हो कर पदाधिकारियों के इस निकाय में भर्ती, अंशतः विशिष्ट निर्धारित पाठ्यचर्या के आधार पर अभ्यार्थियों की जाँच करते थे– हालाँकि यह पाठ्य तालिका परिर्वतन संकेतों के अधीन होती थी। परीक्षाएँ, पद हेतु भर्ती के लिए एक सदा एक सामान्य माध्यम रहीं, जो तांग के अधीन 655 ईस्वीं से पूर्व दस से कम आदमीयों के वाषिक औसत से सुंग (960-1275 ईस्वीं) के अधीन 200-240 आदमी वार्षिक औसत तक फैली थीं। ज्यादातर आदमी अन्य माध्यमों से लोक-सेवा के निचले पदों में प्रवेश पाते थे, फिर भी इन परीक्षाओं में सफलता लोगों को सुशिक्षित व्यक्ति की प्रतिष्ठा के साथ-साथ उच्च पद के उच्चीकृत आसार प्रदान करती थी।

वरिष्ठ अधिकारियों को अधिकार था कि निचले स्तर के पदों के लिए अपने पुत्रों और पौत्रों को नामांकित कर सकें; कुछ तो यह वरिष्ठ पदाधिकारी की निष्ठा सेवा हेतु एक पुरस्कार होता था, और कुछ यह माना जाता था कि अधिकारियों के बेटे खुद ही अच्छे अधिकारी बनेंगे। सीढ़ी के निचले, स्थानीय पायदानों में, लगभग सरकार में शरीक होने के कई अन्य रास्ते भी थे। तदोपरांत ये लोग परीक्षाओं में बैठ सकते थे और केन्द्र सरकार में अधिक व्यापक दायित्वों वाले ऊँचे पदों हेतु पदोन्नति पा सकते थे। सेना में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले व्यक्तियों को भी कभी-कभी असैनिक (लोक) सेवा में लाया जाता था।

7.3.2 विभाजित निष्ठाएँ : परिवार बनाम सम्राट

बार-बार साम्राज्यीय विस्तार हेतु चीन की क्षमता बारम्बार एक प्रबल नौकरशाही को उत्पन्न करने की क्षमता पर निर्भर रही। विद्वान-पदाधिकारीगण कन्फ़्यूशस की शिक्षाओं की शपथ लेते थे, और उनके विचार नैतिक व्यवहार के मूल्यों को उत्साह प्रदान करते थे, जिनमें माता-पिता के प्रति भक्ति एवं आज्ञापालन भी शामिल थे। ये मूल्य चीनी संसार में अस्तित्व के दो खम्बों को मज़बूत करने में मदद करते थे : परिवार और राजपद।

प्रथमतः ये मुल्य विस्तृत परिवार को मन में स्थान देते थे, और पूर्वजों के लिए अपना सम्मान, खासकर विद्वान-पदाधिकारियों के सामाजिक स्तर में। ये वृहद् परिवार, और अक्सर गोत्र, परीक्षाओं के लिए तैयारी कर रहे युवा उच्चकांक्षियों हेतु आवश्यक मदद जुटाते थे– जो उन्हें राजबाज के देशों की ओर ले जा सकते थे। इसके अतिरिक्त, यदि कोई राजकर्मचारी साम्राज्यीय अनुकंपा से वंचित हो जाता, तो उसे अपनी तंगहाली के दिनों में परिवारी जनों के सहयोग की अपेक्षा हो सकती थी। इसी कारण अपने लिए अपने संबंधियों के विगत, और भावी, महत्त्व के चलते, एक नौकरशह अपने पद का प्रयोग, प्रायः अनुचित रूप से, अपने संबंधियों तथा स्वयं की मदद करने के लिए करता।

दूसरे, राज्य इस धारणा को बढ़ावा देता था कि साम्राज्य एक परिवार है, सम्राट उसका मुखिया : इसीलिए वह आज्ञा पालन का हक रखता है– ठीक उसी तरह जैसे कि परिवार का मुखिया। इस मूल्य के स्वीकरण ने विद्वान-पदाधिकारियों की निष्ठा और आज्ञापालन को सुनिश्चित करने में मदद की। इससे एक सशक्त साम्राज्यीय राज्य का निर्णय संभव हुआ।

माता-पिता के प्रति भक्ति एवं आज्ञाकारिता से संबद्ध मूल्यों ने आगे चलकर एक ओर वृहद् परिवारी समूह को मज़बूती प्रदान की और दूसरी ओर, एक अधिपत्य-सूचक साम्राज्यीय राज्य को इसकी निष्पत्ति हुई। चीनी राजनीतिक व प्रशासनिक व्यक्तियों ने स्वतंत्र संगठनों के लिए, ज्यादा जगह नहीं छोड़ी– जैसा कि असंतुष्टों अथवा उत्पीड़ितों की ओर से संगठित विरोध-प्रदर्शन हेतु अनावश्यक होता।

इस सामाजिक वातावरण में, यदि आप केन्द्रीकृत सरकार की व्यवस्था हटा देते, जो कि अपनी आज्ञाओं का निष्पादन अपने राजकर्मचारियों के माध्यम से साम्राज्य के लक्ष्यों के पाने में करवाती थी, ऐसी कोई संस्था नहीं थी जो समाज के व्यवस्थित कार्यपालन को सुनिश्चित कर सकती। (यूरोप में, रोम के पतन के बाद रोमन कैथलिक चर्च ने ऐसा किया; भारत में, जाति-व्यवस्था का अपना ही स्थिरकारी प्रभाव था।) महत्त्वकांक्षा-सम्पन्न लोग अपने भाई-बंधुओं एवं पुरुष-भृत्यों के साथ रहते, हर कोई अपना ही प्रभुत्व जमाने और बातों का फैसला लड़कर तय किए जाने को इच्छुक रहता। यह स्थिति चीनी इतिहास में अनेकों बार सामने आयी।

सामूहिक कार्यों में भाग लेने के लिए ढाँचा, स्पष्टतया, केवल सम्राट के इर्द-गिर्द ही तैयार किया जा सकता था। साम्राज्य भंग हो जाने की स्थिति में, फिर,उसकी शरण में आने हेतु

एक व्यापक पूर्वानुकूलता थी जो कोई भी एक साम्राज्यीय व्यवस्था के पुनर्नवीकरण हेतु वायदे को पूरा कर सकता– एक शक्तिशली सेना-अगुआ (जिसने सुँग की स्थापना की), उत्तर से एक विजेता (शासन की यूआन परम्परा)। वे कन्फ़्यूशस की कृतियों का अध्ययन करते रहे होंगे, इस उम्मीद में कि आखिरकार साम्राज्यीय पद मिल ही जायेगा। पूर्ववर्ती राज्य-व्यवस्था के हस्तांतरण की दोष भूतपूर्व सम्राटों की व्यक्तिगत कमज़ोरियों पर लगाया जायेगा (देखें भाग 7.4)। कन्फ़्यूशस और उनकी शिक्षा सेवार्पित थे, निर्विवाद रूप से, और ऐसा ही प्रशासन में उन लोंगों का साधिकार स्थान था, जिनको इन शिक्षाओं से सम्पन्न किया गया था।

यदि चीनी राज्य की प्रवृत्ति, बावती रूप से, निरंकुश रही तो निवारण (withdrawal) और निवार्तन (resistance) के पुनरावत्त के प्रतिमान भी वहाँ रहे। इसके दो प्रमुख केन्द्र रहे। एक था जन-विद्रोह। कन्फ़्यूशसवाद शासन की विचारधारा बन चुकी थी– और वो भी उनकी जिनको अत्याचारियों के रूप में देखा जाता था। वे जिन्होने अपने उत्पीड़न के खिलाफ बगावत की, उन्होंने चीन की अन्य प्रमुख परम्पराओं में प्रतीक और विचार ढूँढ लिए : ताओवाद (Taoism) और बौद्धधर्म।

निवारण का दूसरा केन्द्र स्वयं राजकर्मचारियों के बीच हो सकता था। अनेक विद्वान-पदाधिकारियों ने अपने व्यवसाय को उच्च-बौद्धिक के रूप में देखा और उनके अनुसार एक पदाधिकारी का जीवन कभी-कभी बहुत नैराश्य पूर्ण हो सकता है। इस विचारणीय अनिश्चितता के माहौल में पदाधिकारीगण ऐसे समूह बनाने लगे जिनके सदस्य एक दूसरे की मदद करते। प्रतिद्वंद्वी समूहों की ओर से शत्रुतापूर्ण कार्रवाइयाँ, आगे चलकर, कुण्ठा का एक दूसरा स्रोत बन गईं। कुछ कुण्ठित व्यक्ति पदाधिकारियों के रूप में रोज़गार से कदम मोड़ लेते थे, और स्वयं को प्राचीन ग्रन्थों को पढ़ने, काव्य लेखन, चित्रकला, इत्यादि के प्रति समर्पित कर देते थे यह अच्छी तरह से जानते हुए कि उन्हें मौत का भी सामना करना पड़ सकता है। न्यायोचित व्यवहार की प्रक्रिया में ऐसा आत्म-बलिदान भी कन्फ़्यूशसवादी परम्परा के अनुसार एक जीवन-बल स्रोत रहा है।

कुछ विद्वान पदाधिकारीगण शक्तिसम्पन्नों को चुनौती ज़रूर दे सकते थे; उनमें से स्वयं सम्राट कभी कोई नहीं बना। उसके लिए ''स्वर्ग के आदेश'' की आवश्यकता होती, जोकि केवल युद्ध के मैदान में जीत के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता था। कन्फ़्यूशसवादियों की विचारधारा और सिखलाई ने उन्हें केवल उनकी सेवा करने के लिए तैयार किया, जो कोई भी साम्राज्यीय सत्ता हासिल कर लेता था– उत्तराधिकार के माध्यम से अथवा बलप्रयोग के माध्यम से। यही थे, साम्राज्यीय सत्ता संबंधी और कन्फ़्यूशसवादी पदानुक्रम संबंधी दो विशिष्ट सिद्धांत, जिन्होंने मिलकर चीनी साम्राज्यीय राज्य को परिभाषित किया।

बोध प्रश्न 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों की जाँच इकाई के अन्त में दिए गए आदर्श उत्तरों से करें।

1) चीनी साम्राज्य अपने राजकर्मचारियों की भर्ती किस प्रकार करते थे?

.....

.....

.....

.....

2) माता-पिता के प्रति कर्त्तव्यपरायणता एवं आज्ञापालन संबंधी मूल्य चीनी साम्राज्यों की प्रगति को किस प्रकार प्रभावित करते थे?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) चीनी साम्राज्यीय अधिकारी-वर्ग के प्रति संभावित विरोध के स्रोत क्या थे?

.....

.....

.....

.....

.....

7.4 राजवंशीय चक्र

चीन साम्राज्यीय राजनीतिक इतिहास राजवंशीय घटनाचक्रों में– पहचान्य चरणों के साथ, आगे बढ़ने की दिशा में प्रवृत्त रहा। चूँकि पढ़ा-लिखा वर्ग व अन्य लोग अपने हितों के पीछे तत्परता के साथ लगे रहे, ऐसी परिस्थितियाँ पैदा हुईं कि जिन्होंने अगले चरण के निर्माण की अनुमति दे दी।

राजवंशीय संस्थापक, और कभी-कभी उसके आसन्न उत्तराधिकारीगण, प्रायः एक उल्लसित प्रेरणा के साथ काम करते थे, अपने आद्य के गति वेग को किंचित जारी रखते हुए। अपनी उत्प्रेरक शक्ति व सत्ता के साथ, एक चकितकारी पैमाने पर संसाधनों पर नियंत्रण रखते हुए, संस्थापक महत्त्वाकांक्षी योजनाओं को जारी रख सकता था : सैकड़ों किलोमीटर लंबी नाविक नहरें खुदवाना, या विशाल महल बनवाना ; दूरगामी विजय अभियान चलाना; किसी महान साम्राज्यीय पुस्तकालय अथवा प्रमुख साहित्यिक या ऐतिहासिक अध्ययनों व संकलनों संबंधी सभा को कार्याधिकार सौंपना। अल्पकालिक सुई वंश (589-617 ईस्वी) ने, सातवीं शताब्दी के प्रथम दशक में, लगभग दो हजार किलोमीटर नहरें, चालीस डग चौड़ी, बलपूर्वक श्रम प्रयोग द्वारा बनाई, जिसमें महिला श्रमिकों ने भी काम किया।

इस पैमाने पर कार्य प्रबंधन करने के लिए और साम्राज्य चलाने के लिए नए सम्राट् को अपने नौकर तंत्र को गठित करने की आवश्यकता थी। दूसरी ओर, सुशिक्षित वर्ग को उम्मीद थी कि साम्राज्य चलाने के लिए उनकी सेवाएँ ली जाएंगी; और उनकी विचारधारा ने उन्हें समझाया कि साम्राट् की सेवा ही करनी चाहिए। यहाँ तक कि यह बाध्यता एक विदेशी, उत्तरी सम्राट् पर भी लागू हुई : वह व्यक्ति जो अपनी कर्मशक्तियों के बल पर शासन करेगा गुप्त रूप से भीतर ही भीतर नष्ट हो जायेगा क्योंकि उसे कागज़ी कार्यवाही के ऊँचे-ऊँचे ढेर पढ़ने पड़ेंगे, और अपने फैसले देने पड़ेगे; साथ ही अक्सर उसको अपने पदाधिकारियों के बीच कभी न समाप्त होने वाले फूटकारी झगड़े से जूझना पड़ेगा।

उक्त राजवंश के एक और आगे के दौर में, इस प्रकार की दिनचर्या से उकता कर, तत्कालीन शासनकारी सम्राट् दिल बहलावों से भी लाभ उठा सकता था– राजभवन में अनेक संगीत समारोह, काव्य या चित्रकारी, शाओवादी कर्मकाण्ड, एक उदाहरण में बढ़ईगीरी। साम्राज्य चलाने का काम वह अपने विश्वस्त पदाधिकारियों पर छोड़ दिया करता था। कभी-कभी वह अपने महल में कुछ उपकृत नपुँसकों पर भी भरोसा करता था, जिनमें वह कहीं अधिक विश्वास रखता था। ये कार्यकर्त्ता, बदले में, अपने निजी, गोपनीय कार्यों के प्रति स्वयं को समर्पित कर देते थे। परिवारिक दायित्वों संबंधी उनकी समझ उन्हें हर उपलब्ध साधन द्वारा अपने परिवारों के हितों को बढ़ावा देने के लिए अपने पद, ऊँचा या नीचा का इस्तेमाल करने को उकसाती थी। उच्च पदाधिकारीगण बड़ी-बड़ी भूसम्पत्तियाँ अर्जित कर सकते थे– यहाँ तक कि नपुंसक जन भी परिवार रखते थे : ऐसे परिवार जिनमें उनका जन्म हुआ हो; बल्कि कभी-कभी वे राजमहल में ''अनेक'' महिला भृत्यों में होते, और ''दंपत्ति'' बच्चों को गोद ले लेता ताकि कुछ-कुछ संपूर्ण परिवार जैसा बन सके– अपने सभी हितों के साथ; और नपुसंकों के लिए ऐसी कोई विचारधारा तक नहीं थी जो उनके दुष्कर्मों से उन्हें रोके।

ये पदाधिकारीगण आम तौर पर साधारण किसानों की ज़मीनों पर कब्जा कर अपनी सम्पत्तियाँ बनाते थे– जो शक्तिशाली पदाधिकारियों का विरोध नहीं कर सकते थे। चूँकि भूमिहीन निराश्रयों की कतारें बढ़ती जाती थीं, कोई बाढ़ अथवा अनावृष्टि किसी बड़े राजद्रोह को उकसाने के लिए आग में घी का काम कर देती थी। एक महान साम्राज्य का यथार्थ आकार दिक्कतें पेश करता था। आवश्यक सूचना एकत्र करना, उसके महत्त्व का मूल्यांकन करना, और उचित उपाय निकालना इस प्रकार के विशाल आकार एवं जटिलता वाले किसी समाज में धीमी प्रक्रियाएँ थीं।

इसी बीच साम्राज्य शायद अव्यवस्था के गर्त में जा रहा था– किसी नए साम्राज्य-निर्माता के लिए रंगमंच तैयार करता हुआ। चीन राजवंशी घटनाचक्र के एक दूसरे दौर में कदम रखने को था।

बाक्स 3

इतिहास लेखन

चीनी साम्राज्यीय राजसभा में होने वाली घटनाएं और सम्राट व उसके राजदरबारियों के लिए आवश्यक गतिविधियों को दो हजार साल से भी अधिक तक, हर रोज, ध्यानपूर्वक देखा और अभिलिखित किया गया। इन अभिलेखों पर आधारित एक राजवंशीय इतिहास को उत्तरवर्ती राजवंश द्वारा प्रायोजित दिया गया – इस आशा के साथ कि इससे पहले के अकल्पित खतरों को टालते हुए अपनी प्रगति का लेखा चित्र तैयार करने में मदद मिलेगी, साथ से पूर्वजों के अपकर्मे को देखते हुए अपने अधिकारग्रहण को सही ठहराने में थी। नए राजवंश द्वारा प्रयोजित कार्य में प्रतित राजवंश के खिलाफ पैदा किया जाने वाला स्वाभाविक जोखिम भी होता था। तिस पर भी सुशिक्षित वर्ग ने अपने अतीत के इतिहास को गंभीरता से लिया, और उनके आदर्शों ने उनके लिए उनके कार्य की गुणवत्ता के बहुत ऊँचे मानक तय किए। उनके अनुसार, इतिहास का लेखन और उसकी व्याख्या एक प्रमुख माध्यम है जिसके द्वारा सम्राट स्वयं प्रभावित होगा।

उनकी अकांक्षा पर ध्यान न देते हुए, फिर भी, इतिहास लेखन अतीत को समझने हेतु एक प्रयास के रूप में, सटीक रूप से, एक असम्बद्ध रूप में, अपने स्वयं के औचित्य प्रतिपादन के रूप में नहीं देखा गया। यह आमतौर पर विद्वान-पदाधिकारियों के लिए एक अतिरिक्त कार्य था। जिनके पास साम्राज्य के मामलों का कार्यभार भी था। उस

विशाल उधम के लिए इतिहास लेखन अभिन्न हिस्सा था, न कि कोई स्वायत्त, विशुद्ध शैक्षिक गतिविधि। विद्वानों ने इतिहास लेखन को नैतिक एवं राजनैतिक कार्यवाही का मार्गदर्शन करने वाले एक साधन के रूप में देखा।

उपलब्ध स्रोतः अभी तक अस्तित्व में हालांकि बहुत सारे हैं, खासकर प्रारंभिक अवधियों ये राजसभा में और उसके इर्दगिर्द घटनाओं पर केन्द्रित लगते हैं। ये बड़ी संख्या में प्राचीन दस्तावेजों की खोज कर 20वीं शताब्दी के दौरान समृद्ध हुए। इसमें मूलपाठ व अन्य सामग्री शामिल हैं जो कब्रों में दफ़न के साथ जमा किए गए थे और वहां सदियों तक अस्तित्व में रहे। उनके अपने मुहल्लों के बारे में काफी कुछ लिखा था, जिसमें स्थानीय इतिहास पर सामग्री शामिल थी, और इन ''स्थानीय भूगोल संबंधी कोषों'' में से हज़ारों आज इतिहाकारों द्वारा अध्ययन के लिए उपलब्ध हैं।

इसके अतिरिक्त अपने समाज के जटिल वर्धमान अनुभवों के उत्तरस्वरूप चीनी विद्वानों व विचारकों ने एक वैचारिक आन्दोलन चलाया जोकि न सिर्फ 5वीं शताब्दी ईसापूर्व कन्फ्यूशस की पीढ़ी में ही नहीं बल्कि आने वाली शताब्दियों में भी बार बार देखा गया। देशी स्रोतों के पूरक हैं। 16वीं शताब्दी से पूर्व विदेशियों जापानियों, अरब वासियों व पारसियों और उसके बाद चीनियों के अन्तर्राष्ट्रीय छात्र समुदाय को कृतियां। यह सब मिलकर अतुल्य समृद्धि एवं जटिलता वाले एक ऐतिहासिक अभिलेख का निर्माण करते हैं।

इतिहास लेखन की चीनी परंपरा में (देखें बॉक्स-3), जब विद्वान-पदाधिकारियों ने पूर्व राजवंश का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया, उन्होंने निरपवाद रूप से साम्राज्य के पतन के लिए ''पिछले बुरे साम्राट्'' और उनकी ग़लतियों की निन्दा की। चूँकि वे स्वयं विद्वान पदाधिकारी थे, वे सामान्य तौर पर अपने पूर्वजों की ग़लतियों, और बढ़ा-चढ़ा कर बताने की प्रवृत्ति को अनदेखा करने को प्रवृत्त रहते थे और ऐसे रूपायित हुआ हाल का साम्राज्य।

विद्वान-पदाधिकारियों की यह मंशा शायद ही रहती हो कि कोई साम्राज्य इतना कमज़ोर हो जाए कि वह अपने आपको अधिक समय तक कायम न रख सके, क्यों कि ऐसे तो उनके पद उनसे छिन जायेंगे। फिर भी उनके कर्म सटीक रूप से यही परिणाम लाए; परन्तु यह उनके अपने तथा अपने परिवारों व गोत्रों के हितों के पीछे तत्परता से लगे रहने का एक अनाभिप्राय परिणाम था। इनको बढ़ावा देने में साम्राज्य को मटिया-मेट कर दिया गया, जो कि एक बड़े पैमाने की दृश्यघटना थी; छोटे पैमाने के वैयक्तिक कृत्यों से उसका संबंध जोड़कर देख पाना आसान नहीं था।

इस घटनाचक्र के उत्तरवर्ती दौरों में समान रूप से भागीदार जो बात थी, वो थी एक साम्राज्य प्रतिमान। एक इतना विशाल और जटिल समाज, असल में जब वह समाज इतना गतिशील हो, पूर्व घटनाओं को फिर से नहीं दोहरा सकता। वहाँ उल्लेखनीय परिर्वतन हुए; परन्तु इस प्रकार की प्रतिक्रियाओं से परे, जैसे कि हैन सभ्यता के एक आम विस्तार का प्रभाव, जनसंख्या वृद्धि, और एक ऐतिहासिक अभिलेख संबंधी एवं साहित्य संबंधी बढ़ता भंडार, उन सारी की सारी प्रवृत्तियों को अभिलक्षित करना मुश्किल होता जो कि ''प्रगति'' की एक स्पष्ट दिशा को साकार करती थीं।

बोध प्रश्न 4

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों की जाँच इकाई के अन्त में दिए गए आदर्श उत्तरों से करें।

1) चीन के साम्राज्यीय इतिहास में राजवंशीय घटना चक्र की रूपरेखा प्रस्तुत करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) किसी चीनी साम्राज्य में इतिहास लिखे जाने का क्या महत्त्व था?

.....

.....

.....

.....

.....

7.5 कन्फ़्यूशसवादी साम्राज्यीय विचारधारा का अंत

लगभग दो हज़ार वर्षों तक कन्फ़्यूशसवाद ही चीन में सरकार की विचारधारा रहा। कन्फ़्यूशसवाद की राजनीतिक, नैतिक, एवं बौद्धिक सर्वोच्चता को नौवीं शताब्दी-मध्य तक कोई गंभीर चुनौती नहीं मिली। उस समय तक यूरोपीय व अन्य विदेशी व्यापारिक, सुसमाचारी, व अन्य हित चीन में गहरे पैठ चुके थे। आने वाले दशकों में चीन के शासक और विद्वजन जागरुक होने लगे, उत्तरोत्तर अधिक प्रखर रूप से, कि कन्फ़्यूशसवादी परम्परा के पास पश्चिमी चुनौती, जिसमें न सिर्फ़ व्यापार शामिल था, यथा एक व्यापक कार्यक्षेत्र वाली चुनौती, जिसमें न सिर्फ़ व्यापार शामिल था, बल्कि बल-प्रयोग के साथ-साथ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी समेत विश्वसनीय ज्ञान तक पहुँच भी शामिल थी। अतः वे अपनी ही परम्परा के मोह में विभक्त होने लगे, क्योंकि उन लोगों की चीनी विद्वानों की स्थिति कुछ-कुछ ऐसी थी जैसे कि पंडितों, उलेमाओं की, और दूसरे प्रकार के पारम्परिक ज्ञान की आवश्यकता थी, साथ ही जो आध्यात्मिक एवं नैतिक उन्नति के लिए पर्याप्त हो; यद्यपि पश्चात्य ज्ञान की आवश्यकता तकनीकी विषयों में पड़ सकती थी।

अन्तिम झटका बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में लगा। कन्फ़्यूशसवादी ज्ञान के प्रति व्यापक निष्ठा हेतु एक विशेष तर्क हमेशा रहा : साम्राज्यीय परीक्षाओं हेतु पाठ्यक्रम– जो कि सरकारी रोज़गार सुनिश्चित करने के लिए निर्णयकारी होती थीं। तदोपरांत, 1905 में, सरकार ने यह संबंध तोड़ दिया; अतः साम्राज्यीय परीक्षाएँ अब उम्मीदवारों के ज्ञान को कन्फ़्यूशसवादी परम्परा पर नहीं परखतीं। इसके मुख्य विषयों में महारथ हासिल करने हेतु मुख्य प्रेरणा समाप्त हो गयी, और ऐसा ही कन्फ़्यूशसवादी विचारधारा में जन हित के साथ हुआ, जो कि सरकार व समाज को संगठित करने हेतु एक मात्र संभव आधार था, यद्यपि वह चीन के इतिहास एवं परम्परा के हिस्से के रूप में सम्मान पाता रहा। आदर्शों के रूप में अपने परिवार एवं अपने पूर्वजों के प्रति समर्पण कायम रहा। एक वैकल्पिक विचारधारा हेतु चीनी खोज ने उन्हें कन्फ़्यूशसवाद तथा 1949 में महाक्रांति की ओर प्रवृत्त किया; साथ ही उसके नेतागण कन्फ़्यूशस व उनके विचारों को मन से दूर करना चाहते थे। तथापि, कुछ प्रेक्षकों का विश्वास है कि चीनी साम्राज्यीय परम्परा साम्यवादी चीन की सत्तावादी शैली में और समूहिक लोगों हेतु वैयक्तिक उद्देश्यों को वश में रखने हेतु उसकी क्षमता में प्रकट होगी।

बोध प्रश्न 5

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों की जाँच इकाई के अन्त में दिए गए आदर्श उत्तरों से करें।

1) आधुनिक विश्व में कन्फ़्यूशसवादी विचारधारा का क्या हश्र हुआ?

.....

.....

.....

.....

.....

7.6 सारांश

हमने चीनी इतिहास में साम्राज्यीय राजवंशों के उत्थान और पतन के प्रतिमान का दो आयामों के साथ-साथ अध्ययन किया :

1) उस प्रतिमान में मुख्य तत्त्व :

- सम्राट;
- उनके पदाधिकारों का निकाय;
- पदाधिकारियों की विचारधारा; और
- एक राजवंश को चुनौती देने वाले संभावित लोग, जो कि या तो उत्तरी घास के मैदानों से आ सकते थे, अथवा चीनी समाज में से; तथा

2) उस प्रतिमान में विभिन्न चरण :

- एक नए राजवंश की स्थापना;
- पदाधिकारियों के निकाय को बढ़ाना, साथ ही राज्यक्षेत्रीय विस्तार ताकि राजकर्मचारियों को वेतनमान आदि के भुगतान करने के लिए राजस्व सुनिश्चित हो;
- साम्राज्य की देखभाल, जो कि पदाधिकारियों व अन्य कार्यकर्त्ताओं द्वारा चलाया जाता था, प्रायः सम्राट के लिए एक औपचारिक भूमिका मात्र के साथ; और
- साम्राज्य के लिए परेशानियों का काल, जब अव्यवस्थाएं फैल जाया करतीं थीं, और फिर उसका अन्त, जिससे एक नए राजवंश की स्थापना हेतु उठने के लिए एक महत्त्वकांक्षी व्यक्ति का रास्ता बना।

हमने देखा कि दो हज़ार साल से, कन्फ़्यूशस से जुड़ी मातृ-पितृ भक्ति संबंधी धारणा ने, सम्राट और उसके पदाधिकारियों की भूमिकाओं व उनके बीच संबंध को परिभाषित करते हुए, एक नए राजवंश के पनपने में योगदान दिया। इसी विचार समूह ने राजवंशों के पतन में भी योगदान दिया, क्योंकि ये पदाधिकारीगण अपनी सत्ता का प्रयोग अपने परिवारों एवं गोत्रों की निजी समृद्धि को संचित करने में करते थे, जिससे राजद्रोह और अव्यवस्था को बल मिलता था। यह घटनाचक्र बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में ही समाप्त हो गया, जब चीन को एक अभूतपूर्व महत्त्व वाली चुनौती का सामना करना पड़ा– इस बार पश्चिमी देशों की ओर से। चीन के इतिहास ने फिर एक निर्णायक मोड़ लिया।

7.7 शब्दावली

ब्रह्माण्डीय व्यवस्था (Cosmic Order) : ब्रह्माण्ड में हर चीज़ की गहन अंतर्सम्बद्धता में विश्वास रखना, चाहे वो सितारे हों या ग्रह, वनस्पति जगत् हो या प्राणिजगत्, या फिर मानवीय कार्यकलाप।

राजवंशीय चक्र (Dynastic Cycle) : राजवंशों के बार-बार होने वाले उत्थान और पतन का एक प्रतिमान।

माता-पिता के प्रति भक्ति (Filial Piety) : यह विश्वास कि व्यक्ति अपने जीवित माता-पिता एवं मृत पूर्वजों के प्रति आज्ञापालन एवं सेवा का ऋणी है; इसमें सम्राट साम्राज्यीय परिवार का मुखिया कहा जाता था।

कर्मकाण्डवाद (Legalism) : प्राचीन चीन में एक राजनीतिक सिद्धांत जो अनभ्य कानूनों, सम्राट की इच्छा पूरी करना, एक मज़बूत और समृद्ध सम्राज्य का निर्माण, आदि के साथ एक कठोर एवं प्रभावशाली राज्य का समर्थन करता था।

स्वर्ग का आदेश (Mandate of Heaven) : चीनी इतिहास में एक लम्बा चला सिद्धांत। इसने इस आधार पर एक विजेता राजवंश द्वारा शासकों को सही ठहराया कि जीतने में उसकी सफलता यह दर्शाती है कि उसे शासन करने हेतु स्वर्ग का आदेश प्राप्त था।

विद्वान-पदाधिकारी (Scholar Officials) : चीन सरकार के राजकर्मचारीगण जो कन्फ़्यूशस की कुछ साहित्यिक रचनाओं से संबंधित उनके ज्ञान के आधार पर चुने जाते थे। यह ज्ञान अनेक, क्रम-विन्यास्त लोक सेवाओं में जाँचा जाता था।

घास के मैदान (Steppe) : समतल, घासभरे, पाले से अनढके साइबेरियाई मैदान– वर्तमान मंगोलिया– चीन की उत्तर दिशा, योद्धा घुड़सवारों की मातृ-भूमि।

अनाभिप्राय परिणाम (Unintended Consequences) : सामाजिक विद्वानों में यह धारणा कि मानवीय कार्यकलापों के अक्सर ऐसे परिणाम सामने आते हैं, जो कर्त्ता/कर्त्ती अभिकर्त्ता को अभीष्ट नहीं होते और उनका पूर्वाभास भी वह नहीं कर सकता।

मूल्य (Value) : जिसको जीवन में मूल्यवान और महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

7.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

सभी प्रमुख सामान्य विश्वकोश, जैसे *एन्साइक्लॉपीडिआ ब्रिटैनिका द कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ़ चाइना*, सभी प्रकाशित खण्ड।

ज़र्ने, ज़ैक, 1982. *ए हिस्ट्री ऑफ़ चाइनीज़ सिविलाइज़ेशन*, कैम्ब्रिज : कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस।

ह्यूआंग, रे, 1990. *चाइना : ए मैक्रो हिस्ट्री*, अर्मोन्क, एन.वाई. : एम.ई. शार्पे।

7.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें भाग 7.1

2) देखें भाग 7.1 और बॉक्स 2.

3) देखें भाग 7.1 और बॉक्स 2.

4) बॉक्स 2, अंतिम पैरा, भाग 7.3 व 7.5 देखें

बोध प्रश्न 2

1) देखें भाग 7.2 और 7.3

बोध प्रश्न 3

1) देखें उप-भाग 7.3.1

2) देखें उप-भाग 7.3.2

3) शासक 'ईश्वर का पुत्र' है, उसे स्वर्ग से शासन का आदेश प्राप्त है, आदि विषयक विचार। इसके बाद के चरण में, अनेक कामोबेश स्वतंत्र राज्य।

   एक सशक्त नौकरशाही, अपने पूर्वजों की बजाय सम्राट पर अधिक निर्भर। 1126 में उत्तरी राजधानी छोड़ने के लिए दबाव पड़ा, याङत्ज़े के तट पर हाङशो में साम्राज्यीय राजधानी पुर्नस्थापित की।

बोध प्रश्न 4

1) देखें भाग 7.4

2) बॉक्स 3 और भाग 7.4 देखें

बोध प्रश्न 5

1) देखें भाग 7.5